अध्याय-6

सांस्कृतिक परिवर्तन

प्रथम कृषीय संस्कृति के विकास में झज्जर जिले ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस क्षेत्र के पश्चिम में बांगर के मैदान दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम में अरावली की पहाड़ियाँ तथा पूर्व में यमुना नदी स्थित है। झज्जर और उसके आस-पास के क्षेत्र में अनेकों मौसमी नदियाँ साहबी, कृष्णावती, दोहन और इंदौरी आदि बहती थी। इन नदियों ने प्राचीन समय में अनाज उत्पादन, सिंचाई योग्य जल, विविध प्रकार के वनस्पति एवं पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं को जीवन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही अरावली की पहाड़ियों से पत्थर, धातु एवं खनिज तत्व प्राप्त कर प्राचीन संस्कृतियों के लोगों ने व्यापार को भी बढ़ावा दिया। इस क्षेत्र में प्रथम नगरीय सभ्यता का भी क्रमबद्ध सांस्कृतिक विकास देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम बी .बी. लाल ने झज्जर जिले में बहादुरगढ़ के पास एक पुरास्थल का सर्वेक्षण किया, जिसका कालक्रम पी. जी. डब्लू. संस्कृति (PGW) से जोड़ा गया (1954-55: 139)। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोज पंजाब सरकार के द्वारा मोहनबाड़ी के पास स्थित खानपुर से 40 पत्थर की मूर्तियाँ प्रतिवेदित करके की गई (आई.ए.आर.1965-66)। तत्पश्चात 1970 के दशक के आरंभ में बादली क्षेत्र में सीलकराम ने सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में बादली-1 और सुरहा नामक पुरास्थल प्रकाश में आए (अशोक कुमार 1990-91: 07)। साथ ही सीलकराम ने सामंत देव के सिक्कों और 40 पत्थर की मूर्तियाँ, ब्राह्मण एवं जैन संप्रदाय के संरचनात्मक अवशेषों और 10 वीं शताब्दी ई. के टूटे हुए शिलालेख मोहनबाड़ी से प्रतिवेदित किए । 1975 में शीला देवी ने शोध कार्य हेतु इस पुरास्थल का दौरा किया और 7 पत्थर की मूर्तियाँ प्रतिवेदित की (राजेश कुमार 2016: 31)। सूरजभान ने 1975 में बादली-I पुरास्थल का सर्वेक्षण किया (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 166)। 1975 में हरियाणा सरकार के पुरातत्व विभाग ने इस क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण किया और मोहनबाड़ी से एक बड़े मंदिर के अवशेष एवं आरंभिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक सामग्री प्रतिवेदित की (आई.ए.आर 1978-79)। दक्षिणी हरियाणा में सांस्कृतिक क्रम को जानने हेतु भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के विभाग के दिल्ली सर्किल ने सी. मार्गबंधु और ओ.पी. शर्मा, डी.पी. सिन्हा और डी.डी. डोंगरा आदि ने साहबी नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी किनारों का सर्वेक्षण कार्य किया| इस सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति के औरंगपुर-2, याकूबपुर, बंदौला, झबेली, सुरहा आदि पुरास्थल प्रकाश में आए।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम. फिल. शोधकर्ताओं ने झज्जर जिले में खंड के आधार पर सर्वेक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बेरी खंड का सर्वेक्षण गाँव-गाँव घूमकर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम. फिल. शोधार्थी राय सिंह कादियान (1987-88) ने किया। इसी वर्ष स्नेहलता (1987-88) ने रोहतक के सांपला खंड का सर्वेक्षण किया उनके शोध निबंध में 7 पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड से प्रतिवेदित हैं। इसके पश्चात राजीव कटारिया (1989-90) ने बहादुरगढ़ खंड का सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप 30 पुरास्थल प्रकाश में आए। जयनारायण (1990-91) ने मातनहेल खंड के अंतर्गत आने वाले गाँवों का सर्वेक्षण किया| उन्होंने 19 पुरास्थल प्रतिवेदित किए जिनमें से मोहनबाड़ी का ऐतिहासिक टीला भी शामिल था। इसी वर्ष अशोक कुमार (1990-91) ने बादली क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एम.फिल शोधार्थी सुरेंद्र सिंह ढाका ने साल्हावास खंड का गाँव-गाँव घूमकर सर्वेक्षण कार्य किया और 20 पुरास्थल प्रतिवेदित किए। जगदीश सिंह राहड़ ने झज्जर खंड का सर्वेक्षण किया और झज्जर खंड में कुल 56 पुरास्थल प्रतिवेदित किए।

झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड, बेरी खंड, झज्जर खंड, मातनहेल खंड और साल्हावास खंड के सर्वेक्षण के आधार पर 16 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति, 6 पुरास्थल विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति, 32 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति, 7 पुरास्थल गैरिक मृदभांड संस्कृति, 6 पुरास्थल चित्रित धूसर संस्कृति, 19 पुरास्थल आरंभिक ऐतिहासिक संस्कृति, 107 पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति तथा 31 पुरास्थल मध्यकालीन संस्कृति तथा 10 पुरास्थल उत्तर मध्यकालीन से संबंधित हैं। सर्वेक्षण के अतिरिक्त इस क्षेत्र में उत्खनन भी किए गए हैं। बादली-I (आर. सी. ठाकरान और अमर सिंह 2008, 2009-10) और लोहट का उत्खनन (ठाकरान और अमर सिंह: पर्सनल कम्युनिकेशन) आर.सी. ठाकरान और अमर सिंह के नेतत्व में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

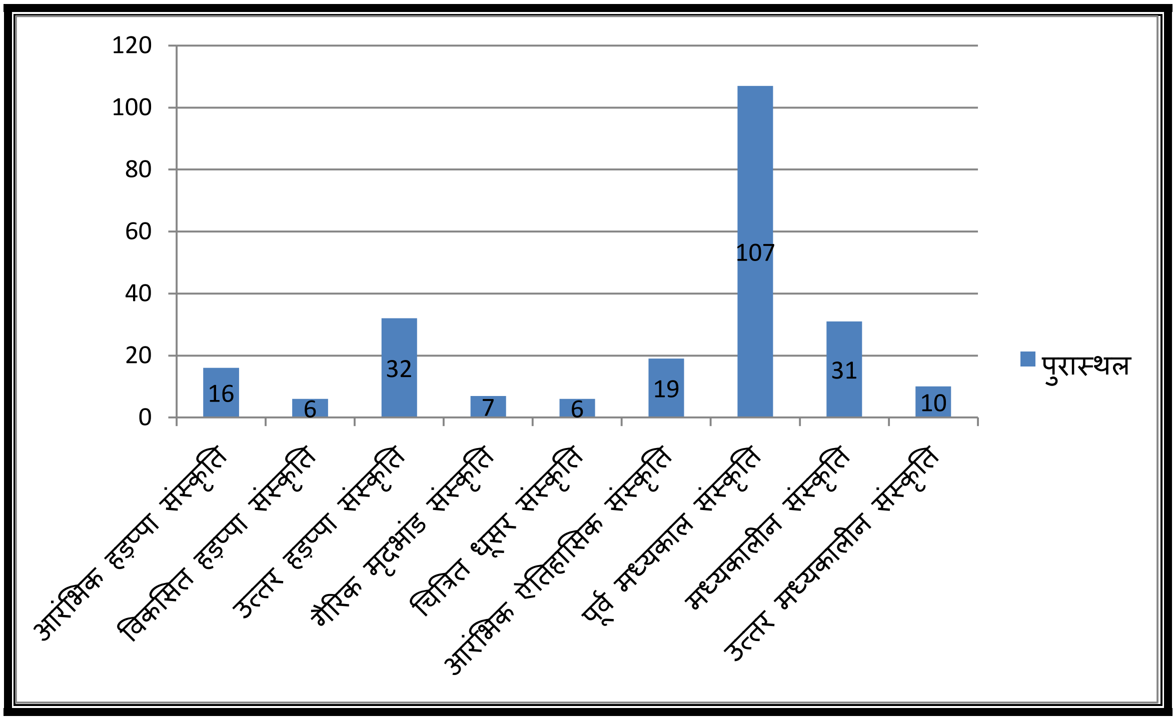

चित्र: 6.1 झज्जर जिले में पुरास्थल

6.1: आरंभिक हड़प्पा संस्कृति

आरंभिक हड़प्पाकाल को दो भागों (हाकड़ा और सोथी-सीसवाल संस्कृति) में विभाजित करते है। साल्हावास खंड में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से हाकड़ा संस्कृति के कुछ मृदभांड प्राप्त हुए हैं जिनमें से चिपकवाँ अलंकरण वाले मृदभांड (Mud Applique Ware), रिजर्व प्रलेप वाले मृदभांड (Reserved Slipped Ware) और हैंडल मिले हैं। झज्जर जिले के अन्य खंडों से हाकड़ा संस्कृति के मृदभांड नहीं मिले हैं। हरियाणा के भिवानी जिले में स्थित खानक को छोड़कर अन्य किसी पुरास्थल से हाकड़ा संस्कृति के प्रमाण इस क्षेत्र में नहीं मिले हैं (परमार 2012)। ढ़ाकला-3 पुरास्थल से हाकड़ा मृदभांडों की प्राप्ति यह दर्शाती है कि संभवतः झज्जर क्षेत्र में यह संस्कृति प्रचलित रही होगी।

झज्जर में आरंभिक हड़प्पाकाल की सोथी-सीसवाल संस्कृति के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड, झज्जर खंड और बेरी खंड से प्रतिवेदित हैं। बहादुरगढ़ खंड के असोढ़ा, जासौर खेड़ी, लुकसार-1, नूना माजरा, निलौठी-2 और परनाला आदि पुरास्थलों से आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं। बेरी खंड के चमनपुरा और मेहराना से आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड मिले हैं।

बादली के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के निचले स्तर से राख और जले हुए कण मिले हैं। ये इस काल के लगभग सभी निखातों से मिले हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के (2009-10) उत्खनन से एक एकल ईंट से निर्मित दीवार के संरचनात्मक अवशेष मिले हैं। इन घरों की दीवारें ऊँची नहीं थी तथा इस काल से संबंधित कोई पूरा संरचनात्मक अवशेष नहीं मिला है हालांकि दीवारों के छोटे आकार के आधार पर कहा जा सकता है कि घरों का आकार भी छोटा ही था (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। ईटों का आकार 1:2:3 सेंटीमीटर था।

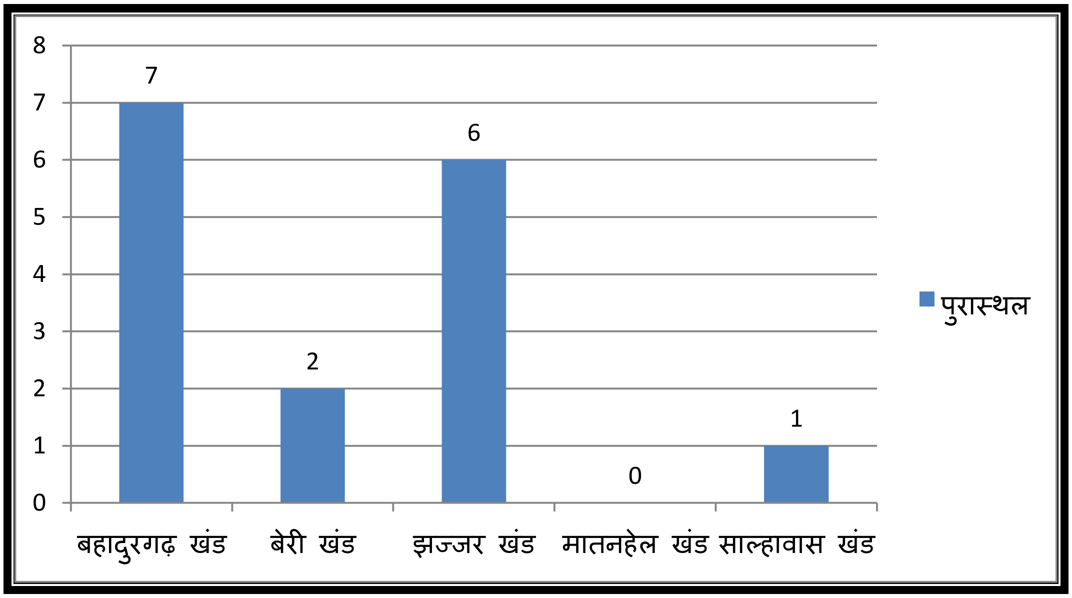

चित्र: 6.2 झज्जर जिले के आरंभिक हड़प्पाकालीन पुरास्थल

बादली के उत्खनन से संग्रह पात्र, हत्थे, कप, कटोरे, साधारण तश्तरियां आदि मिले हैं इन मृदभांडों की सतह पर चित्रण अभिप्राय एवं उत्कीर्ण अलंकरण भी मिलते हैं। चित्रण अभिप्रायों में मुख्यतः समानांतर रेखाएं, क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं, सादे मृदभांड पर काली चौड़ी पट्टियाँ तथा लाल रंग का प्रलेप भी मिलता है। इसके अतिरिक्त मृदभांडों की बाहरी सतह पर पकाने के बाद कुछ मृदभांडों के ऊपर हड़प्पा लिपि के चिन्ह् मिले हैं जिनमें से ज्यादातर रेखाएं हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। आरंभिक हड़प्पाकाल के इस स्तर से क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, लहरदार रेखाएं तथा गढन डी प्रकार के अंदर की ओर उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड मिले हैं जो बहुत ही खुरदरे हैं।

बादली के उत्खनन से पकी मिट्टी के मनके, सिलखड़ी, कांचली मिट्टी, कार्नेलियन, हड्डी आदि के मनके मिले हैं। इनमें से मुख्यत: सिलखड़ी और कार्नेलियन के मनके विशिष्ट हैं। ये मनके बटन के आकार, पहिए के आकार और छोटे से छिद्र से युक्त मिले हैं। ये मनके हड़प्पा कालीन संस्कृति के लोगों की तकनीकी दक्षता को दर्शाते हैं। सिलखड़ी के मनकों का व्यास 2 से 3 सेंटीमीटर तक है। उत्खनन से आरंभिक हड़प्पाकाल के पक्की मिट्टी से निर्मित गोलाकार एवं मुष्टिका आकार के चक्र मिले हैं। इनमें से कुछ अच्छी तरह से पके हुए हैं तथा कुछ कम पके हुए हैं।

6.2: विकसित हड़प्पा संस्कृति

झज्जर में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92) और मातनहेल खंड (जय नारायण 1990-91) से प्रतिवेदित किए गए हैं। बहादुरगढ़ खंड के जासौर खेड़ी-5 और लुकसार-1, झज्जर खंड के दावला-2, मेहराना, सुरहा तथा मातनहेल खंड के अमदल शाहपुर पुरास्थल से विकसित हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के घरों की दीवारें प्रकाश में आई है। ये दीवारें कच्ची मिट्टी से निर्मित थी। इन ईंटों का आकार 1:2:4 से. मी. है जो कि विकसित हड़प्पाकाल का मानक अनुपात है। कहीं-कहीं तीन परतों कि ईंटों का भी प्रयोग किया गया है। सामान्यता घरों की दीवारें इंग्लिश बॉन्ड सिस्टम से बनाई गई है (ठाकरान, अमर सिंह 2008-9: 211)। ईंटों के निर्माण में पीले रंग की मिट्टी, गाद, काली मिट्टी से किया गया था और ईंटों के निर्माण के लिए मिट्टी तैयार करते समय क्वार्टज के कणों का प्रयोग किया गया था ताकि उनमें दरारें आने से रोका जा सके। पकी ईंटों का प्रयोग दर्शाता है कि यहां के लोग पकी ईंटों से परिचित थे किंतु इस स्थिति में नहीं थे कि वह इनका निर्माण कर प्रयोग कर सकें (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के उत्खनन से घरों में रसोईघर के प्रमाण मिले हैं। यहां पर रसोईघर उत्तर पूर्वी दिशा में बनाए गए थे (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 169)। रसोईघर को एक मिट्टी से निर्मित कच्ची दीवार के द्वारा अलग किया गया है जिसमें एक रसोई घर में गोलाकार चूल्हे का प्रयोग किया गया है तथा दूसरे रसोई घर में ‘U’ आकार के चूल्हे का प्रयोग किया गया है। इन चूल्हों के निर्माण में लाल रंग की मिट्टी का प्रयोग किया गया है तथा इन्हें मिट्टी की मोटी परत से लीपा भी गया है। यू आकार के चूल्हे के अंदर एक गोलाकार गर्त मिला है जिसमें राख और पशुओं की हड्डियां मिली हैं। इससे स्पष्ट है कि यहां के लोगों का जीवन पशुपालन एवं जंगली पशुओं के शिकार पर निर्भर था।

दावला, मेहराना, सुरहा पुरास्थलों से छिद्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार, बाहर की ओर झुकी बारी वाले मृदभांड आदि आकार-प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मध्यम गढ़न के हैं तथा चाक पर निर्मित हैं। संग्रह पात्र और साधार-तश्तरियाँ काले रंग की क्षैतिज पट्टियों से चित्रित हैं। अमदल शाहपुर पुरास्थल से छिद्रित जार, तश्तरियाँ, साधार-तश्तरियाँ, बड़े संग्रह पात्र, चषक, मटके आदि शामिल हैं| बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड मिले हैं जिनमें साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार और चषक आदि प्रमुख हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। विकसित हड़प्पा काल में द्विरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मोटे, अच्छी तरह से पके हुए और चित्र अलंकरण से युक्त हैं। इन मृदभांडों के चित्रण में मुख्यतः प्राकृतिक एवं ज्यामितीय चित्रण मिले हैं। मृदभांडों के ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है तत्पश्चात् उन पर गहरे काले रंग का चित्रण भी किया गया है।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के चरण से न केवल तांबे से निर्मित वस्तुएं मिली हैं बल्कि मूषक के टूटे हुए टुकड़े भी मिले हैं। इन सभी में तांबे की मात्रा उपलब्ध है हालांकि सीमित मात्रा में तांबे की वस्तुएँ मिलने से यह संकेत मिलता है कि तांबे की वस्तुओं का कम प्रयोग किया जाता है। साधारण तकनीक एवं सीमित मात्रा में तांबे की प्राप्ति के कारण हो सकता है। इसके अतिरिक्त बादली के उत्खनन से 18 सेंटीमीटर लंबी एवं 0.5 सेंटीमीटर चौड़ी एक तांबे की छड़ मिली है जो लंबवत स्थिति में खड़ी मिली है (ठाकरान और अमरसिंह 2008: 169)। सांस्कृतिक पुरावशेषों में मिट्टी से निर्मित चक्र, हस्तनिर्मित छोटे घड़े, पक्की मिट्टी से निर्मितबैल की मूर्तियाँ तथा बैल की नाक में छिद्र किया हुआ मिलता है जो यह दर्शाता है कि इसे खिलौने के रूप में प्रयोग किया गया होगा तथा यह पालतू पशु होने की ओर भी संकेत करता है। इसके अतिरिक्त इस पुरास्थल से पकी मिट्टी की निर्मित चूड़ियां और मनके भी मिले हैं| पकीं मिट्टी से निर्मित की छोटी-छोटी गोलियां भी मिली है। इसके अतिरिक्त सिलखड़ी के मनके भी मिले हैं जिन पर बॉन पॉइंट के छोटे टुकड़ों से अलंकरण किया हुआ मिला है। इसके अतिरिक्त कार्नेलियन के विभिन्न आकर-प्रकार के मनके भी मिले हैं। कुछ मनकों पर विशिष्ट अलंकरण भी किए गए हैं जो हड़प्पाकाल कि प्रमुख विशेषता है। इसके अतिरिक्त चर्ट निर्मित घनाकार बाँट भी मिले हैं| इस काल से पकी मिट्टी के केक भी मिले हैं। जो अच्छी तरह से पके हुए हैं तथा त्रिभुजाकार के हैं तथा समतल एवं चिकने धरातल के हैं| इस पर किसी प्रकार की पॉलिश नहीं की गई है। हालांकि इस काल में इडली प्रकार के केक भी प्रचलित रहे किंतु उन पर हड़प्पा लिपि के उत्कीर्ण चिन्ह मिलते हैं। इसके अतिरिक्त पत्थर निर्मित गेंद, सिल-लोढ़े आदि भी उत्खनन से मिले

हैं| चर्ट ब्लेड, पकी मिट्टी से निर्मित चित्रित चूड़ियां, मनके, अगेट के मनके, एक लाजवर्द का मनका, बोन पॉइंट भी में मिले हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210-11)।

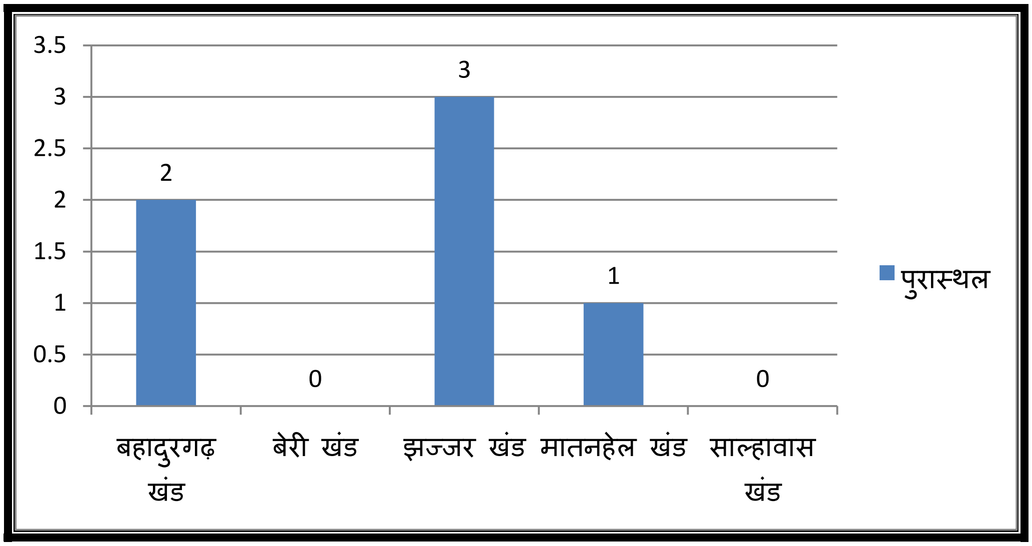

चित्र: 6.3 झज्जर जिले में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल

6.3: उत्तर हड़प्पा संस्कृति

उत्तर हड़प्पा काल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी(कादियान 1987-88), झज्जर (राहड 1991-92), बादली (अशोक कुमार 1990-91) साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। इन पुरास्थलों के उत्खनन से आवासीय-संरचना, मृदभांड-परंपरा, तकनीकी, व्यापार और वाणिज्य आदि प्रकाश में आई हैं। उत्तर हड़प्पा काल के दौरान नगर-नियोजन एवं आवासीय-संरचना इतनी उत्तम नहीं थी जितनी कि विकसित हड़प्पा काल के दौरान दिखाई देती है। घरों का निर्माण मिट्टी तथा कच्ची ईंटों दोनों से किया जाता था तथा घरों में टूटी-फूटी कच्ची ईंटों का प्रयोग किया हुआ मिलता है। संभवत: ये इंटें पूर्ववर्ती चरण से लाई गई होंगी। इस चरण के पुरातात्विक साक्ष्य प्रदर्शित करते हैं कि जल निकासी की उत्तम व्यवस्था नहीं थी।

उत्तर हड़प्पा कालीन मृदभांड लाल रंग के मध्यम से मोटी गढ़न के हैं| इसके अतिरिक्त कालीबंगा-1 गढ़न के ए और एफ प्रकार के मृदभांड भी मिले हैं (कटारिया 1989-90)| यहां से प्राप्त सभी मृदभांड चाक निर्मित मिले हैं और उनके ऊपर लाल रंग का प्रलेपन किया गया है| ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी मिट्टी से निर्मित हैं और अच्छी तरह से पके हुए हैं। मृदभांडों के मुख्य आकार-प्रकार में लटकती हुई बारी वाली साधारण तश्तरियाँ, लंबी गर्दन वाले घड़े, कोलर वाली बारी के जार,

कटोरे, तसले और छोटे आकार के घड़े शामिल हैं। ये मृदभांड काले रंग की क्षैतिज रेखाओं, लहरदार रेखाओं, लंबवत रेखाओं, बिंदुओं, वनस्पति एवं फूल पत्तियों, जीव-जंतुओं के चित्रण से युक्त हैं। कुछ मृदभांड बाहर की तरफ उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त हैं जिनमें उकेरी हुई लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं को काटती हुई तिरछी रेखाएं, लंबवत रेखाएं आदि प्रमुख हैं| कुछ मृदभांडों का निचला हिस्सा उंगलियों से खुरदरा बनाया गया है।

इस काल में क्षेत्रीय उत्पादन या निर्माण पर अधिक बल दिया गया। इस काल में कार्नेलियन, अगेट, सिलखड़ी के मनके बहुत कम मात्रा में मिलते हैं जबकि कांचली मिट्टी की वस्तुएं बड़ी मात्रा में मिलने लगती हैं। इससे पता चलता है कि अर्ध कीमती पत्थर से निर्मित वस्तुओं का स्थान कांचली मिट्टी की वस्तुओं अर्थात् क्षेत्रीय उत्पादों ने ले लिया था जिनमें मनके, चूड़ियाँ, सील आदि प्रमुख हैं। इस काल में पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुएं भी पहले के काल की अपेक्षा अधिक मिलती हैं तथा पकीं मिट्टी से निर्मित वस्तुओं में मनके, चूड़ियां, खिलौना गाड़ी-चक्र, पशु मृण्मूर्तियां, खेलने की वस्तुएं, इडली आकार के पकी मिट्टी के केक आदि मिलते हैं। इनके अतिरिक्त पत्थर से निर्मित वस्तुओं में सिल-लोढ़े, बाँट, पत्थर निर्मित गेंद आदि भी मिलती हैं।

उत्तर हड़प्पा संस्कृति में नगर-नियोजन, संस्कृतिक सामग्री, तकनीकी, व्यापार एवं वाणिज्य आदि में अवनति दिखाई देती है। हड़प्पा सभ्यता के विकसित चरण के सभी मूलभूत विशेषताएं जैसे विशिष्ट मृदभांड परंपरा, त्रिभुजाकार केक, पक्की मिट्टी की ईंटों से निर्मित घर, अन्नागार, सामूहिक चूल्हे (दीक्षित 1979: 130)। ये परिवर्तन की प्रक्रिया एक नगरीय सभ्यता से ग्रामीण संस्कृतियों के लिए उत्तरदाई थी। द्वितीय सहस्राब्दी के आरंभ में हड़प्पा सभ्यता के जीवन स्तर में गिरावट आ जाती है। अतः इस चरण में नगरीय सभ्यता क्षेत्रीय ग्रामीण संस्कृति के रूप में परिवर्तित दिखाई देती है

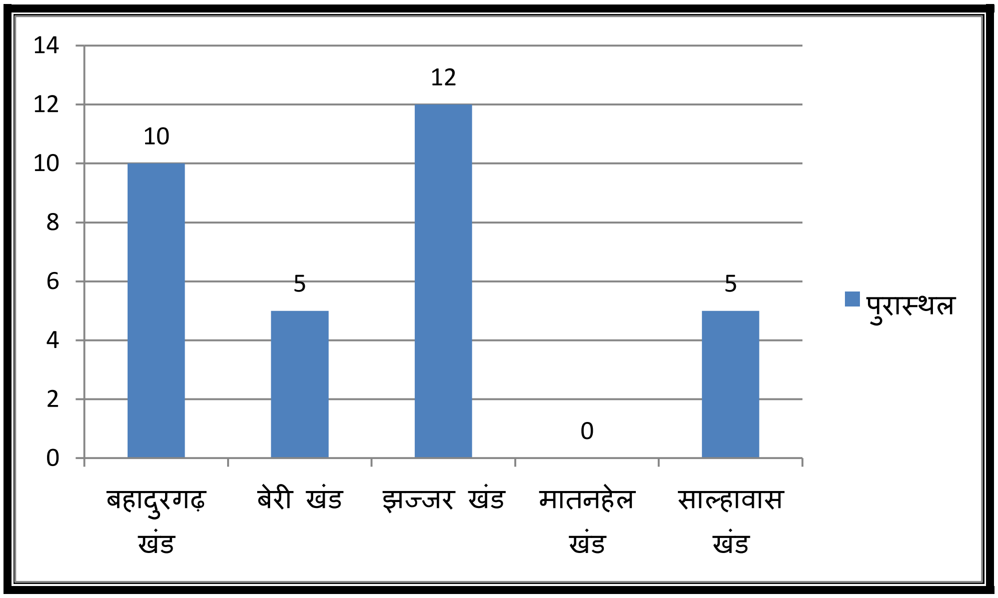

चित्र: 6.4 झज्जर जिले में उत्तर हड़प्पाकालीन पुरास्थल

साल्हावास खंड में उत्तर हड़प्पाकाल के बाद लम्बा सांस्कृतिक अंतराल दिखाई देता है। सर्वेक्षण के दौरान उत्तर हड़प्पा काल के बाद यहाँ पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। झज्जर जिले के अन्य खंडों से गैरिक मृदभांड संस्कृति, चित्रित धूसर संस्कृति, आरंभिक ऐतिहासिक संस्कृति, मध्यकालीन एवं उत्तर मध्यकालीन संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। गैरिक मृदभांड संस्कृति के 5 पुरास्थल झज्जर खंड तथा 2 पुरास्थल मातनहेल खंड से प्रतिवेदित हैं। चित्रित धूसर संस्कृति के 4 पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड,बेरी खंड से 1 पुरास्थल तथा झज्जर खंड से 1 पुरास्थल प्रतिवेदित है। आरंभिक ऐतिहासिक कालीन पुरास्थलों में बहादुरगढ़ खंड से 3 पुरास्थल, बेरी खंड से 11 पुरास्थल, मातनहेल खंड से 5 पुरास्थल प्रतिवेदित हैं। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में 19 पुरास्थल बहादुरगढ़ से, 13 पुरास्थल बेरी खंड से, 30 पुरास्थल झज्जर खंड और 45 पुरास्थल साल्हावास खंड से प्रतिवेदित हैं। मध्यकालीन पुरास्थलों में 10 पुरास्थल बेरी खंड तथा 21 पुरास्थल मातनहेल खंड से प्रतिवेदित हैं। उत्तर मध्यकालीन पुरास्थलों में कुल 10 पुरास्थल झज्जर खंड से प्रतिवेदित हैं।

6.4: पूर्व मध्यकालीन संस्कृति

झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड, पूर्व मध्य काल के दौरान राजनीतिक सत्ता के लिए समय-समय पर होता रहा। इस समय व्यापार-वाणिज्य, उद्योग-धंधों एवम् हस्त-शिल्प और तकनीकी के क्षेत्र में उन्नति

हुई। पूर्व-मध्यकालीन संस्कृति के समय सत्ता परिवर्तन का प्रभाव व्यापारिक वर्ग पर भी पड़ा। इस समय के लोग मकानों, कच्ची ईंटों, पकीं इंटों से निर्मित घरों में निवास करते थे।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडो में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडो के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढक्कन, घुण्डीदार ढक्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडो की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं पूर्व मध्यकाल के समय कृषि एवं पशुपालन करते थे। गेहूं, धान, जौ आदि की फसलें उगाई जाती थी। शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन ग्रहण करते थे। इसके अतिरिक्त खान-पान में दूध, दही और विविध प्रकार के फल भी बहुतायत में प्रयोग में लाए जाते थे। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों से सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी की बैल की मृण्मूर्ति, अज्ञात पक्षी की मृण्मूर्ति, कांचली मिट्टी की चूड़ी, बालुका पत्थर पर निर्मित लोढ़े, बाँट, पकीं मिट्टी के मनके आदि मिले हैं।

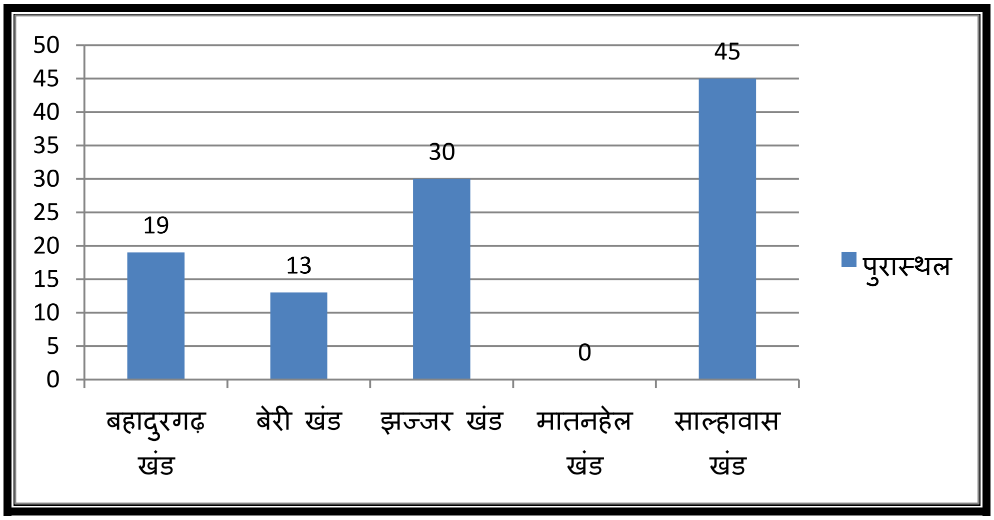

चित्र: 6.5 झज्जर जिले में पूर्व मध्यकालीन पुरास्थल